अनुसंधान – १९९७ – १०
संपादक - विजयशीलचन्द्रसूरि

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय निवेदन
अनुक्रमणिका
वाचक-सिद्धिचन्द्रगणिकृतः मङ्गलवादः – सं. विजयशीलचन्द्रसूरि ---------------------------------- १
सोमतिलकसूरि-कृतः शत्रुंजययात्रा-वृत्तांतः – सं. विजयप्रद्युम्नसूरि ---------------------------------- १०
महेश्वरकविरचिता संशयगरलजाङ्गुली नाममाला – सं. विजयशीलचन्द्रसूरि--------------------------१२
आ. वर्धमानसूरि-शिष्य-श्रीसागरचंद्र मुनिविरचित उत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा-बद्ध नेमिनाथ-रास
– सं. रमणीक शाह -- ३६
विजयमानसूरिकृत पट्टक – सं. महाबोधिविजय -- ४४
श्रीपुण्यहर्षरचित लेखशृंगार – सं. महाबोधिविजय -- ५०
जगडूसाह-छंद – सं. कांतिभाई बी. शाह -- ६८
हस्तप्रतनी प्रशस्तिमां प्राप्त नगरो के गामो अंगेनी ऐतिहासिक सामग्री – एक नोंध – डॉ.
कनुभाई शेठ -- ७३
व्यवहार भाष्यनी एक गाथानी पाठचर्चा – विजयशीलचंद्रसूरि ------------------------------------ ७७
हेमचंद्राचार्यरचित कृष्णगोपीना प्रणयने लगतुं एक मुक्तक – ह. भायाणी -------------------------- ७८
शब्दप्रयोगो – ह. भायाणी -- ७९
बे परंपरानो एक समान पौराणिक कथाघटक – विजयशीलचन्द्रसूरि, ह. भायाणी ------------------- ८८
Desis employed in Pradyumnavijaya's Samaraditya-Kevali-Ras – Muni Rajhans Vijay------ 89
Notes on a few words from Bollees Glossary to पिंडनिज्जुत्ति and ओहनिज्जुत्ति - H. C.
Bhayani -- 94
Some sporadic notes on the Brahaddesi – H. C. Bhayani-- 100
Notes on some Prakrit Words – H. C. Bhayani -- 105
संशोधन-समाचार – मेरु तुंग-बालावबोध-व्याकरण – सं. डॉ. नारायण म. कंसारा ---------------- १०८
वर्षानुं आगमन – ह. भायाणी --- ११०
प्रकीर्ण ---११२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org